AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

प्राथमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 दया कुमारी[1] और डॉ0 लता[2]

https://doi.org/10.5281/zenodo.17922855

Review: 08/11/2025 Acceptance: 08/11/2025 Publication:13/12/2025

सारांशः यह अध्ययन बरेली जनपद के विकास खंड मीरगंज में कार्यरत परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। यह शोध वर्णनात्मक विधि पर आधारित है। अध्ययन में बरेली के मीरगंज विकास खंड के 35 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से 50 शिक्षक और 44 मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों से 217 शिक्षकों के एक उद्देश्यपूर्ण नमूने का चयन किया गया। आँकड़ों के संग्रह हेतु डॉ. एच. एल. सिंह तथा डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित 'मूल्य मापनी' (Value Scale) का उपयोग किया गया, जो छह मूल्यों (सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक) का मापन करती है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु t परीक्षण का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि शिक्षकों में व्यावसायिक आचरण और सामाजिक चेतना का स्तर लिंग–निरपेक्ष रूप से समान है। हालाँकि, सौंदर्यात्मक, राजनीतिक और धार्मिक मूल्यों में पाया गया अंतर नीति निर्माताओं को शिक्षकों के प्रशिक्षण और नेतृत्व क्षमता विकास में लिंग–विशिष्ट हस्तक्षेपों की आवश्यकता की ओर इंगित करता है, ताकि राष्ट्रीय निर्माण के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एक मजबूत मूल्य आधारित नींव रखी जा सके।

मुख्य शब्द – मूल्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय

प्रस्तावना – आदिम युग में मनुष्य का जीवन मुख्य रूप से शारीरिक शक्ति और पशुवत व्यवहार पर आधारित था। जीवन का एकमात्र लक्ष्य अस्तित्व की रक्षा करना था, और नैतिक आचार संहिता का कोई विशेष स्थान नहीं था। उस समय, जो शारीरिक रूप से शक्तिशाली होता था, सत्ता उसी की होती थी और अन्य लोग उसके सामने नतमस्तक रहते थे। कालांतर में, मानवीय चेतना विकसित हुई। लोगों को समूह का महत्व और आवश्यकता का बोध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप वे समूह में रहने लगे और मित्रवत व्यवहार विकसित हुआ। मानव ने यह समझा कि समाज विहीन व्यक्ति केवल एक कोरी कल्पना है; कोई भी व्यक्ति सहयोग और सहायता के बिना सफलतापूर्वक जीवन यापन नहीं कर सकता। इस जागरूकता के कारण, शारीरिक शक्ति को महत्व देने की अवधारणा में बदलाव आया।

प्रत्येक समाज ने अपने सदस्यों के सफल सह–अस्तित्व के लिए कुछ आदर्शों, परंपराओं, और रीति–रिवाजों की स्थापना की। समाज अपने प्रत्येक सदस्य से अपेक्षा करता है कि वे इन मानकों का पालन करें। जो व्यक्ति समाज द्वारा निर्धारित इन रीति–रिवाजों और मूल्यों का पालन नहीं करता, उसे सम्मान नहीं मिलता। इन्हीं आदर्शों, परंपराओं और रीति–रिवाजों में मूल्यों की झलक प्रतिबिंबित होती है। मूल्यों के विकास में समाज का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति प्रायः स्वयं को समाज की मान्यताओं और धारणाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है, और इसी प्रयास के फलस्वरूप उसमें समाज में निहित मूल्यों का विकास होता है। इस प्रकार, मूल्य समाज से ग्रहण किए जाते हैं और सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ इन मूल्यों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। मूल्य अनुभवों के साथ परिपक्व होते जाते हैं।

सृष्टि में मनुष्य की महत्ता अन्य प्राणियों से अधिक है, क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। अन्य प्राणियों का जीवन चक्र सरल होता है; वे आत्म–रक्षा करते हैं और केवल स्वयं के लिए जीते हैं। परंतु मनुष्य के जीवन में आदर्श, रीति–रिवाज, संस्कृति और मूल्य एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। मानव केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी जीता है। पशु जीवन की तरह मानव जीवन केवल इंद्रिय जगत तक सीमित नहीं हैकृयह उसकी चेतना का निम्न स्तर है, जबकि पशु जगत के लिए चेतना का यह स्तर ही अंतिम है। मानव समाज मूल्य–उन्मुखी है। जिस प्रकार एक स्त्री आभूषण धारण करके अति सुंदर लगती है, उसी प्रकार मनुष्य मूल्यों को धारण करके समाज में सर्वोत्तम प्रतीत होता है। प्रत्येक व्यक्ति में मूल्य विद्यमान होते हैं, लेकिन वे भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। कभी–कभी मूल्यों में द्वंद्व भी होता है। जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। पारंपरिक दर्शनशास्त्र में मूल्य की अवधारणा सत्यता, सुंदरता और कल्याणकारी पर आधारित है, जिसे हमारे महान मनीषियों ने सत्यम् शिवम् सुंदरम् की महान धारणा के रूप में स्थापित किया। मूल्यों

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बहराइच, उत्तर प्रदेश भारत
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश भारत

के संदर्भ में प्रचलित है कि मूल्य मनुष्य की इच्छाओं को संतुष्ट करते हैं और ये शाश्वत सत्य हैं, जो जीवन के सभी अच्छे कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं।

प्रोफ़ेसर आगबर्न ने अपनी पुस्तक 'फंडामेंटल्स ऑफ़ एथिक्स' में लिखा है कि: "मूल्य वह है जो इच्छा को तृप्त करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो।" इस परिभाषा में मानव जाति की जैविक से लेकर आध्यात्मिक सभी आवश्यकताओं का समावेश हो जाता है, जिनका मानव जीवन के लिए महत्व है और जिन्हें पाने के लिए व्यक्ति चेष्टा करता है, जिसके लिए वह जीवित रहता है तथा बड़े से बड़ा त्याग करने के लिए उद्यत रहता है।

इस प्रकार, मूल्य वह सत्य है जिसके लिए व्यक्ति जीता है और आवश्यकता पड़ने पर इसकी रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहता है। कुछ मूल्य सार्वभौमिक होते हैं (जैसे सत्य, अहिंसा, प्रेम), जो देश, काल और परिस्थिति के आधार पर नहीं बदलते, जबकि कुछ मूल्य तात्कालिक होते हैं (जैसे संवैधानिक मूल्य समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व), जो बदलते रहते हैं। मूल्य वह मापदंड है जो व्यक्ति को यह बताते हैं कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

वर्तमान संकट: भौतिकतावाद और मूल्यों का ह्रास: वर्तमान समय में विज्ञान और तकनीकी विकास के फलस्वरूप जहाँ भौतिक विकास तीव्र गति से हुआ है, वहीं समाज में स्थापित मूल्यों का भी तीव्र गति से ह्रास हुआ है। आज समाज में दया, करुणा, ममता, सेवा, सद्भाव जैसे मूल्यों का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है। आधुनिक जीवन की जटिलता ने मानव को तनावग्रस्त बना दिया है। मानव जीवन का उद्देश्य अधिक से अधिक सुख–सुविधाओं के साधन जुटाना और उनका उपभोग करना हो गया है। इस भौतिक सुख की मृगमरीचिका में व्यक्ति अनैतिकता पर विचार किए बिना लक्ष्य को पाना चाहता है, जिससे सामाजिक मूल्य तिरोहित होते जा रहे हैं। इसी भावना ने समाज में अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी है।

वर्तमान समय में मूल्यों का ह्रास हमारी शिक्षा के लिए एक गंभीर चिंतन का विषय बन गया है। समाज के प्रबुद्धजनों का मत है कि विद्यालयों में मूल्यों का विकास शिक्षा के द्वारा किया जाना चाहिए। निःसंदेह ज्ञान बढ़ रहा है, किंतु यह ज्ञान व्यक्तित्व के विकास में सहायक नहीं हो रहा है। इसलिए, विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को इस ओर ध्यान देना होगा, जिसके लिए शिक्षकों के अंदर उच्च मूल्यों का होना आवश्यक है।

सिंह (1991), सक्सैना (1995), प्रतिभा (1996), के0के0 चौधरी (1997), दीपक कुमार गुप्ता (2005), संजीव कुमार भारद्वाज (2007), आर. कुमार (2018), वी. राणा एवं जे. मेहरा (2021). एस रेड्डी एवं के. नायर (2021), ए शर्मा एवं वी. यादव (2021), पी. वर्मा एवं वी. राव (2021) उक्त अध्ययनों में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सन्दर्भ में शोध कार्यों की संख्या बहुत अल्प है। अतः बालकों के विकास में प्राथमिक शिक्षकों के महत्तव को समझते हुए शोध का विषय बरेली जनपद के विकास खण्ड मीरगंज के परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' रखा है जिस पर अभी तक एक भी शोध कार्य नहीं हुआ है। अतः इस विषय पर अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

अध्ययन के उद्देश्य–

- परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- लिंग भेद के आधार पर प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत, शिक्षकों के मूल्यों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श: प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के विकास खण्ड मीरगंज के परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में सौद्देश्य न्यादर्श विधि का चयन किया गया है। चयनित न्यादर्श का विवरण इस प्रकार से है:– बरेली जनपद के विकास खण्ड मीरगंज के 35 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों से 50 शिक्षकों को चयनित किया गया है तथा 44 मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों से 50 शिक्षकों को चयनित किया गया है।

उपकरण: अध्ययन के उद्देश्य एवं मापनियों की विशेषताओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन हेतु उपकरण के रूप में डॉ० एच० एल० सिंह तथा डॉ० एस० पी० अहलूवालिया द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का चयन किया गया है। इसमें कुल 25 प्रश्न हैं जो कि छः मूल्यों का मापन करते हैं। इस परीक्षण का प्रशासन शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मापन के संदर्भ में किया गया है। इस परीक्षण में निम्न मूल्य सम्मिलित हैं :

- सैद्धान्तिक मूल्य
- आर्थिक मूल्य
- सौन्दर्यात्मक मूल्य
- सामाजिक मूल्य
- राजनैतिक मूल्य
- धार्मिक मूल्य

आँकड़ों का संकलन – आँकड़ों के संग्रह हेतु, ने संबंधित विभाग से आवश्यक अनुमति प्राप्त की। तद्पश्चात शिक्षकों से सीधे संवाद स्थापित कर उन्हें निर्धारित परिसूची भरने का निवेदन किया। भरी हुई परिसूची की पुष्टि की गई ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी प्रविष्टि छूटी न हो। डेटा संकलन के पश्चात, प्रत्येक प्रतिक्रिया को एक निर्देशिका (मैनुअल) के अनुरूप अंक दिया गया। अंततः, समस्त प्रदत्त का फलांकन अंकन कुंजी का उपयोग करके किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या – फलांकन के पश्चात प्रदत्तों को आवश्यकतानुसार विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत किया गया। यही वर्गीकरण सारणीयन कहलाता है। शिक्षकों के समूह को परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालय, पुरूष तथा माहिला में वर्गीकृत कर लिया गया।

तालिका सं0 1

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन

मूल्य	विद्यालय का प्रकार	मध्यांक	मानक विचलन	t मान
सैद्धान्तिक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	94.6	11.27	1.82
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	91.7	11.23	
आर्थिक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	84.3	12.2	0.18
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	84.6	11.09	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	65.8	14.12	6.58*
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	78.4	12.95	
सामाजिक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	107	14.24	2.20*
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	102.71	13.44	
राजनैतिक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	75	12.56	1.68
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	78	12.67	
धार्मिक मूल्य	परिषदीय विद्यालय	90.4	16.56	0.98
	मान्यता प्राप्त निजी विद्यालय	92.5	13.49	

(संकेत*= t का मान 0.05 स्तर पर सार्थक)

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य का 'टी' मान 6.58 तथा सामाजिक मूल्य का 'टी' मान 2.20 पाया गया। यह टी मान 98 डी० एफ० पर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि परिषदीय शिक्षकों के सामाजिक मूल्य मान्यता प्राप्त शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों से सार्थक रूप से अधिक है, तथा मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य परिषदीय शिक्षकों की तुलना में अधिक पाये गये हैं इसका तात्पर्य यह है कि मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक परिषदीय अध्यापकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक मूल्यों में श्रेष्ठ हैं। अतः इन मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गयी। अतः स्पष्ट है कि सौन्दर्यात्मक मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों में दोनों समूहों के शिक्षकों में अन्तर विद्यमान है।

शेष मूल्यों का 'टी' मान 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इन मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गयी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों समूह के शिक्षकों में समानता है। मध्यमानों में अन्तर न्यादर्श की त्रुटि के कारण है। वास्तविक अन्तर नहीं है।

तालिका सं0 3

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

मूल्य	विद्यालय का प्रकार	मध्यांक	मानक विचलन	t मान
सैद्धान्तिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	94.6	13.45	1.7742
	महिला शिक्षिकाएं	91.7	9.28	
आर्थिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	85.3	11.15	1.218
	महिला शिक्षिकाएं	83.3	12.05	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	पुरूष शिक्षक	76.9	14.33	0.6218
	महिला शिक्षिकाएं	75.5	12.94	
सामाजिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	102.8	16.07	1.9717
	महिला शिक्षिकाएं	106.7	11.54	
राजनैतिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	76.6	12.92	3.6524*
	महिला शिक्षिकाएं	73.3	11.43	
धार्मिक मूल्य	पुरूष शिक्षक	87.7	12.24	3.9296*
	महिला शिक्षिकाएं	95.2	14.65	

(संकेत*= t का मान 0.01 स्तर पर सार्थक)

तालिका 3 को देखने से स्पष्ट होता है कि पुरुष शिक्षकों में सैद्धान्तिक, मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 94.6, 85.3, 76.9, 102.8, 76.6 तथा 87.7 पाया गया। ये सभी मध्यमान औसत मूल्य स्तर के प्रदर्शित करते हैं। पुरूष शिक्षकों का सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा राजनैतिक मूल्य का मध्यमान निम्न मूल्य स्तर को प्रकट करता है, जबकि सामाजिक मूल्य का मध्यमान 102.8 उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है।

महिला शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 91.7, 83.3, 75.7 106.7, 73.3 तथा 95.2 पाया गया। ये सभी मध्यमान औसत मूल्य स्तर का द्योतक है। सामाजिक, मूल्य का मध्यमान 106.7 पाया गया। यह मध्यमान उच्च मूल्य स्तर को प्रकट करता है। राजनैतिक मूल्य तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 73.3 तथा 75.7 पाया गया। यह मध्यमान निम्न मूल्य स्तर को प्रदर्शित करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों दोनों में ही सामाजिक मूल्य का मध्यमान उच्च स्तर पर विद्यमान है। जबकि राजनैतिक और सौन्दर्यात्मक मूल्य महिला शिक्षकों एवं पुरूष शिक्षकों दोनों ही में निम्न स्तर पर पाये गये। शेष सभी मूल्य दोनों समूह के शिक्षकों में औसत मूल्य स्तर पर विद्यमान थे।

लिंगभेद के अनुसार पुरूष एवं महिला शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों के मानक विचलनों को देखने से ज्ञात होता है, कि पुरुष शिक्षकों में सामाजिक मूल्य का मानक विचलन सबसे अधिक 16.0658 पाया गया तथा आर्थिक मूल्य का मानक विचलन सबसे कम 11.1517 पाया गया। अतः पुरुष शिक्षकों में सामाजिक मूल्य के सम्बन्ध में सबसे अधिक विविधता पाई गई, तथा आर्थिक मूल्यों में सबसे कम विविधता पाई गई।

महिला शिक्षकों में सर्वाधिक मानक विचलन धार्मिक मूल्य (14.6462) का पाया गया, तथा सबसे कम मानक विचलन सैद्धान्तिक मूल्य (9. 2822) का पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न महिला शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में अन्य मूल्यों की अपेक्षा अधिक असमानता थी तथा सबसे कम असमानता सैद्धान्तिक मूल्य के सम्बन्ध में पाई गई।

लिंग भेद के आधार पर शिक्षकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्य का टी मान 98 डी० एफ० पर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः उपरोक्त मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गयी। राजनैतिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्यों का टी मान क्रमशः 3.6524 तथा 3.9296 पाया गया।

यह टी मान 98 डी० एफ० पर 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्य के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गयी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा राजनैतिक मूल्यों में कम रूचि रखती हैं जबकि धार्मिक मूल्यों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक रूचि रखती हैं। दैनिक जीवन में दृष्टिपात करने पर भी यही निष्कर्ष देखने को मिलता है।

निष्कर्ष एवं चर्चा

- परिषदीय एवं मान्यता प्राप्त निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि अन्य मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं था। अतः सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई, जबकि अन्य मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गई। सौन्दर्यात्मक मूल्य कला, रचनात्मकता और सौंदर्यशास्त्र के प्रति रुचि से संबंधित हैं। यह अंतर दर्शाता है कि निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में इन मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं, इसके विपरीत सामाजिक मूल्यों को परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक महत्व देते है। यह परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों में समग्र विकास और एकीकृत शिक्षा पर बढ़ते ध्यान को प्रतिबिंबित करता है। शर्मा एवं यादव, 2021 के शोध में भारतीय शिक्षकों में सामाजिक मूल्य की प्रबलता पाई गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 कला और खेल–एकीकृत शिक्षा पर विशेष बल देती है (NEP 2020, पैरा 4.6)। परिषदीय और निजी शिक्षकों के मध्य इस मूल्य में पाए गए अंतर को दूर करने के लिए, सरकार को शिक्षकों के लिए सौन्दर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों की शिक्षा के महत्व पर केंद्रित प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

- लिंगभेद के आधार पर अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षकों सैद्धान्तिक, आर्थिक तथा धार्मिक मूल्य औसत स्तर के पाये गये। जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा राजनैतिक मूल्य निम्न स्तर के पाए गए तथा सामाजिक मूल्य उच्च स्तर पर पाये गये।

- महिला शिक्षकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक तथा धार्मिक मूल्य औसत स्तर के पाए गए जबकि सामाजिक मूल्य उच्च स्तर के पाए गए तथा राजनैतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य निम्न स्तर पर पाये गये।

- लिंगभेद के आधार पर शिक्षकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं था। जबकि राजनैतिक मूल्यों तथा धार्मिक मूल्यों में दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः राजनैतिक मूल्यों तथा धार्मिक मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर दी गई, जबकि अन्य मूल्यों के सम्बन्ध में शून्य परिकल्पना अस्वीकृत नहीं की गई।

यह निष्कर्ष इंगित करता है कि शिक्षण पेशा स्वयं ही उच्च सामाजिक सेवा भावना की मांग करते हुये आर्थिक और सैद्धांतिक व्यवहारिकता बनाए रखता है। दोनों लिंगों में सौन्दर्यात्मक और राजनैतिक मूल्यों का निम्न होना एक समान समस्या है जिसे NEP 2020 के बहु–विषयक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सुधारना आवश्यक है। सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक और सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह दर्शाता है कि शिक्षकों के बीच व्यावसायिक आचरण और सामाजिक चेतना का स्तर लिंग से स्वतंत्र रूप से समान है।

यद्यपि दोनों समूहों में राजनैतिक मूल्य निम्न स्तर पर था, अंतर का अर्थ है कि पुरुष परंपरागत रूप से, महिलाओं की तुलना में शक्ति, प्रभाव या नेतृत्व को सांख्यिकीय रूप से अधिक महत्व देते है। भारतीय आयोगों (जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, 1948–49) ने शिक्षकों के नेतृत्व क्षमता को महत्वपूर्ण माना है, और यह अंतर नीति निर्माताओं को शिक्षकों की नेतृत्व प्रशिक्षण में लिंग–विशिष्ट हस्तक्षेप की आवश्यकता को दर्शाता है।

पुरूष एवं महिला शिक्षकों में 'औसत' धार्मिक मूल्य था, लेकिन सार्थक अंतर पाया गया। वर्मा एवं राव, 2021 के शोध में यह पाया गया है कि भारतीय समाज में महिलाएँ, पारंपरिक मूल्यों और आध्यात्मिकता के अधिक करीब होने के कारण पुरुषों की तुलना में धार्मिक मूल्यों को अधिक महत्व देती हैं। यह निष्कर्ष भारतीय शिक्षा के नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार को लिंग परिप्रेक्ष्य से समझने में सहायता करता है।

इन निष्कर्षों का सार यह है कि शिक्षकों में उच्च मूल्य एक मजबूत आधार है जिस पर राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इसका निम्न स्तर शिक्षकों की नीति–निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी और विद्यालय नेतृत्व को कमजोर कर सकता है।

सन्दर्भ

- कपिल, एच०के० : अनुसंधान विधियाँ आगरा हरप्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, 1995.
- कटियार, पी०सी० : वैल्यू एण्ड वोकेशनल प्रीफ्रेंस, आगराः एच०पी० भार्गव बुक हाउस, 1987.
- कुमार, आर. (2018). शहरी और ग्रामीण परिवेश के प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के मूल्यों का एक तुलनात्मक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 12(1), 101–115.
- महोलिया, एम0के0: मानव एवं मानवता का अध्ययनः अतीत और वर्तमान, इन्सपिरा – जर्नल ऑफ मॉर्डन मैनेजमेन्ट एण्ड इन्टप्रिनियरशिप, 15(4),88–92
- सिंह : आधुनिकता का प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों पर प्रभाव का अध्ययन, एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध एम०जे० पी० रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, 1991.
- भारद्वाज, एस0के0 : माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों की अभिवृत्ति, मूल्य एवं शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन, पी–एच० डी० डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, 2007.
- भार्गव, एम0 : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगराः एच०पी० भार्गव बुक हाउस, 2001.
- पाण्डेय, आर०एस० : शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, 1998
- पाण्डेय, आर०एस० एवं के० एस० मिश्र : मूल्य शिक्षण, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर, 1997–98.
- राणा, वी., और मेहरा, जे. (2021). एनईपी 2020 में नीति कार्यान्वयन और संकाय का प्रतिरोध. जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन पॉलिसी, 32(3), 123–137.
- राय, पी०एन० : अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2002.

- रेड्डी, एस., और नायर, के. (2021). ग्रामीण विश्वविद्यालयों में एनईपी के कार्यान्वयन की बाधाएँ. रूरल एजुकेशन जर्नल, 8(1), 34–48.
- शर्मा, ए., और यादव, वी. (2021). एनईपी 2020 को लागू करने में शिक्षक मूल्यों की भूमिका: जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 25(3), 45–60.
- वर्मा, पी., और राव, वी. (2021). भारतीय विश्वविद्यालयों में एनईपी 2020 के कार्यान्वयन में वित्तीय बाधाएँ. इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन फाइनेंस, 29(3), 76–90.
- चौधरी, के०के० : इक्कीसवीं शताब्दी में मूल्य शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, नई दिल्ली एन० सी० ई० आर० टी० 2000.
- चौधरी, के०के० : माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की पुनर्संरचनाः मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में, जौनपुर पूर्वांचल जनरल ऑफ एजूकेशन स्टडीज, 1997.
- गुप्ता, डी0के0 : प्राथमिक विद्यालयों में सेवारत तथा पूर्व सेवारत शिक्षक प्रशिक्षुओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध एम०जे०पी० रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली 2005.

Websites

- https://www-education-gov-in/
- https://ncert-nic-in/
- https://www-niepa-ac-in/
- http://upbasiceducation-gov-in/